International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

कालिदास के नाटकों की प्रस्तावना - एक समीक्षा

Dr. Nalini Tilkar

Assistant Professor and HOD, PMCOE Government Madhav Arts and Commerce College

सारांश

कालिदास के तीनों रूपकों की प्रस्तावना, के विश्लेषण से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि इसमें उन्होंने कवि-परिचय, नाटक की कथावस्तु का तथा नाटक खेलने के अवसर का परिचय दिया है। मालविकाग्निमित्रम नाटक व विक्रमोर्वशीयम् नाटक में प्रयोगातिशय तथा अभिज्ञानशाकुन्तल नाटक की प्रस्तावना में अवगलित नामक प्रस्तावना भेद है | इसके अनन्तर तीनों नाटकों की प्रस्तावना मे आशीर्वादत्मक नान्दी अवलोकित होती है। नाट्याभिनय के अवसर की चर्चा करते हुए उन्होने यह भी निर्देश किया है कि किस समाज की आज्ञा से नाटक खेला जा रहा है। उनकी प्रस्तावना मे मनोवैज्ञानिक तथ्य भी मिलता है।

मुख्य बिन्दु- प्रस्तावना, पूर्वरङ्ग, नान्दी, प्रयोगातिशय, अवगलित, सूत्रधार, पारिपार्श्विक

संस्कृत का दृश्यकाव्य- साहित्य, रूपक भेदों में परिगणित हुआ है। सभी रूपकों में 'नाटक' प्रधान है और 'प्राधान्येन व्यपदेशा : भवन्ति' की उक्ति के अनुसार रूपक के अन्य भेदों के लिए भी सामान्यत: 'नाटक' शब्द प्रयुक्त होता रहा है।संस्कृत वाङ्मय में नाटक रमणीय कला के रूप में स्वीकार किया गया है । कहा गया है कि "नाटकान्तं कवित्वम्" अर्थात किसी भी कवि की काव्य कला नाटक के आधार पर ही परखी जा सकती है । नाट्य को पञ्चम वेद कहने से यह तथ्य प्रकट होता है कि हमारे सम्पूर्ण जीवन में जिस प्रकार वेदानुमोदित मार्ग अभ्युदय का हेतु है इसी प्रकार नाट्यशास्त्र एवं नाटकों का पर्यालोचन भारतीय साहित्य के अनुशीलनकर्ता के लिए उसकी सारस्वत साधना का प्रधान अङ्ग बन जाता है । वेदविहीन मनुष्य भारतीय परम्परा में नास्तिक कहा जाता है तो नाट्यशास्त्र एवं नाटकों के बिना संस्कृत अध्यवसाय की परिपूर्णता स्वीकार नहीं की जा सकती है । किसी नाटक की मुख्य कथा को आरम्भ करने के प्रारम्भ में कुछ कृत्यों का विधान है। जिसे पूर्वरङ्ग कहते हैं। इसमें वे सब कृत्य सम्मिलित हैं, जिन्हें नर्तक लोग नाटक आरम्भ करने के पहले रङ्गशाला के विघ्नों को दूर करने के लिए करते हैं।यह विधि 'पूर्वरङ्ग' कहलाती है।

इनमें से रङ्गस्थल के विघ्नों की शान्ति के लिए नान्दी की जाती है । अत: नाटक का आरम्भ नान्दी - पाठ से होता है, जिसमें देवता, बाह्मण तथा राजा की आशीर्वाद-युक्त स्तुति की जाती है इसमें मङ्गल वस्तु, शङ्ख, चन्द्र, चक्रवाक और कुमुद आदि का वर्णन रहता है तथा यह 8 (आठ) या 12 (बारह) पदों की होती है। नान्दी पाठ

के पश्चात् रङ्गद्वार का आरम्भ होता है, जिसमें स्थापक आकर काव्य की स्थापना करता है यदि वर्णनीय वस्तु होती है तो देवता का रूप रचकर, यदि अदिव्य होती है तो मनुष्य का वेष धारण करके और यदि मिश्र होती है तो दोनों में से किसी एक का रूप धारण करके आता है । वह वस्तु, बीज, मुख या पात्र की सूचना देता है । इस प्रकार इन सब विधानों के स्थापक द्वारा किये जाने का नियम है, पर वास्तव में सूत्रधार ही इनको सम्पन्न करता है वही नान्दी-पाठ करता है और जिसके उपलक्ष्य में नाटक होने वाला है उसका उल्लेख करके

पारिपार्श्विक या अपनी पत्नी अथवा विदूषक का आह्वान करके बातचीत आरम्भ कर देता है, तथा प्राय: किसी ऋतु आदि के वर्णन के साथ कवि तथा उसके नाटक की सूचना देकर प्रधान नाटक का श्रीगणेश कर देता है | प्रस्तुत शोध में कालिदास के नाटकों की प्रस्तावना में नाट्य सिद्धान्त और व्यवहार परस्पर कितने अनुगामी रहे हैं यह बताने की चेष्टा की गई है.

मालविकाग्निमित्र-

महाकवि कालिदास प्रणीत मालविकाग्निमित्रम्' नाटक में सूत्रधार मञ्च पर उपस्थित होकर यह मङ्गलाचरण प्रस्तुत करता है-

एकैश्वर्ये स्थितोऽपि प्रणतबहुफले यः स्वयं कृत्तिवासाः

कान्तासम्मिश्रदेहोऽप्यविषयमनसां यः परस्ताद यतीनाम् ।

अष्टाभिर्यस्य कृत्स्नं जगदपि तनुभिर्बिभ्रतो नाभिमान:

सन्मार्गालोकनाय व्यपनयतु स वस्तामसी वृत्तिमीशः ।,-

इस पद्म में कामना की गई है कि - भक्तों को बहुत फल देने का ऐश्वर्य अपने पास होते हुए भी जो स्वयं हाथी की खाल ओढ़े रहते हैं, शरीर के साथ पत्नी को लगाए रहते हुए भी जिन्हें अभिमान छू तक नहीं गया - ऐसे महादेव पाप की ओर ले जाने वाली आप लोगों की बुद्धि को मिटा दें जिससे सन्मार्ग का अवलोकन कर सकें ।

यहाँ मङ्गलाचरण में सामाजिकों के कल्याण का आशीर्वादात्मक कथन है । इसके अनन्तर सूत्रधार रङ्गमञ्च पर पारिपार्श्विक को आमन्त्रित करता है। पारिपार्श्विक मञ्च पर उपस्थित होकर कहता है-भाव, अयमस्मि |

सूत्रधार : - अभिहितोऽस्मि विद्वत्परिषदा कालिदासग्रथित -

वस्तुमालविकाग्निमित्रं नाम नाटकस्मिन् वसन्तोत्सवे प्रयोक्त-व्यमिति । तदारभ्यतां सङ्गीतम् ।

सूत्रधार कहता है- विद्वानों की सभा ने मुझे कहा है कि इस वसन्तोत्सव पर कालिदास का बनाया हुआ 'मालविकाग्निमित्र नाम का नाटक खेला जाय | इसलिए सङ्गीत आरम्भ कीजिए |

पारिपार्श्विक: - मा तावत् । प्रथितयशसा भासकविपुत्रसौमिल्ल-

- कादीनां प्रबन्धानतिक्रम्य वर्तमानकवेः कालिदासस्य क्रियायां कथं परिषदो बहुमानः |

पारिपार्श्विक कहता है - नहीं जी | यह उचित नहीं है । भास, कविपुत्र और सौमिल्लक आदि प्रख्यात नाटककारों के नाटकों को छोड़कर क्यों सभा आजकल के इस वर्तमान कवि कालिदास की रचना को इतना मान दे रही है? इस

बात को स्पष्ट करते हुए सूत्रधार कहता है-

अयि ! विवेकविश्रान्तमभिहितम् |

पश्यपुराणमित्येव न साधु सर्व

न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम् ।

सन्तः परीक्ष्यान्तरद्भजन्ते

मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः ॥

अरे, यह तुमने बिना सोचे समझे कह दिया | देखो पुराने होने के कारण ही सब (नाटक) अच्छे नहीं होते हैं नये होने के कारण कोई नाटक बुरा होता है। विद्वान लोग तो दोनों की परीक्षा करके एक को जो भी उचित लगे ग्रहण करते है। मूर्ख की बुद्धि दूसरों की बुद्धि के पीछे चलती है

यह सुनकर पारिपार्श्विक कहता है -

आर्यमिश्राः प्रमाणम् ।

सूत्रधार कहता है अतएव आप शीघ्रता करें । सभा ने मुझे पहले से ही जो आज्ञा दे रखी है, उसका मैं वैसे ही आदर के साथ पालन करना चाहता हूँ जैसे आदर से यह स्वामिनी- भक्त दासी अपनी स्वामिनी महारानी धारिणी की आज्ञा का पालन करने के लिए इधर चली आ रही है ।

तेन हि त्वरतां भवान् ।

शिरसा प्रथमगृहीतामाज्ञामिच्छामि परिषदः कर्तुम् ।

देव्या इव धारिव्याः सेवादक्षः परिजनोऽयम् 11

इतना कहकर सूत्रधार व पारिपार्श्विक मञ्च से चले जाते हैं और प्रस्तावना समाप्त होती है। सूत्रधार द्वारा पठित नान्दी में सामाजिकों के लिए आशीर्वाद के साथ ही कवि का नामोल्लेख है ।

आचार्य भरत ने प्रस्तावना में कवि परिचय को स्पष्ट करते हुए कहा है

प्रसाद्य रङ्गं विधिवत् कवेर्नाम च कीर्तयेत् ।

प्रस्तावनां ततः कुर्यात् काव्यप्रख्यापनाश्रयाम्।।

रङ्गस्थ प्रेक्षकों का मनोरञ्जन कर चुकने पर वह नाटक,लेखक कवि का नाम घोषित करे और फिर नाटक की कथावस्तु को निदर्शित करने वाली 'प्रस्तावना' का प्रारम्भ करे |

आचार्य भरत ने आमुख या प्रस्तावना के पाँच भेदों को निर्देश किया है। इनमें से मालविकाग्निमित्र नाटक की प्रस्तावना में प्रयोगातिशय नामक भेद है । प्रयोगातिशय को स्पष्ट करते हुए भरत ने कहा है-

प्रयोगेऽत्र प्रयोगं तु सूत्रधार : प्रयोजयेत् ।

ततश्च प्रविशेत् पात्रं प्रयोगातिशयो हि सः ।।

आमुख या प्रस्तावना के एक प्रयोग में सूत्रधार दूसरे प्रयोग का गठन करता है और उसी योजना के अनुसार पात्र

का मञ्च पर प्रवेश होता है तो उसे प्रयोगातिशय मानना चाहिये ।

सूत्रधार की सूचना के अनुसार मञ्च पर बकुलावलिका का प्रवेश होता है अत: यहाँ प्रयोगातिशय है |

विक्रमोर्वशीय-

महाकवि कालिदास प्रणीत 'विक्रमोर्वशीयम्' नाटक में सूत्रधार रङ्गमञ्च पर उपस्थित होकर मङ्गलाचरण प्रस्तुत करता है-

वेदान्तेषु यमाहुरेक पुरुषं व्याप्य स्थितं रोदसी

यस्मिन्नीश्वर इत्यनन्यविषय: शब्दो यथार्थाक्षर : |

अन्तर्यश्च मुमुक्षुभिर्नियमितप्राणादिभिर्मृग्यते

स स्थाणुः स्थिरभक्तियोगसुलभो निःश्रेयसायाऽस्तु वः ॥

इस पद्य में कामना की गई है कि – वेदान्तों

(द्वैत,अद्वैत,विशिष्टाद्वैत आदि) में जिसे एक ऐसा पुरुष कहा गया है जो आकाश तथा पृथ्वी में व्याप्त है, जिसका ईश्वर यह नाम सार्थक है और इस ईश्वर के नाम से अन्य कोई नहीं पुकारा जा सकता , मोक्ष प्राप्ति के इच्छुक पुरुष जिसे प्राणायाम् द्वारा के भीतर ढूंढा करते हैं, वह स्थिर भक्तियोग (सच्ची भक्ति) द्वारा प्राप्त होने वाला परमदेव शिव आप सबका कल्याण करे ।

यहाँ मङ्गलाचरण में सामाजिकों के कल्याण का आशीर्वादात्मक कथन है ।इसके अनन्तर सूत्रधार रङ्गमञ्च पर मारिष (पारिपार्श्विक) को आमन्त्रित करता है। पारिपार्श्विक मञ्च पर उपस्थित होकर कहता है-

भाव ! अयमस्मि ।

सूत्रधार: -

मारिष ! परिषदेषा पूर्वेषां कवीनां दृष्टरसप्रबन्धा ।

अहमस्यां कालिदासग्रथितवस्तुना नवेन विक्रमोर्वशीयनामधेयेन

त्रोटकेनोपस्थास्ये । तदुच्चताम् पात्रवर्ग: स्वेषु स्वेषु पाठेष्ववहितैर्भवितव्यमिति।

सूत्रधार कहता है कि - मारिष ! यह सभा प्राचीन कवियों के अनेक नाटकों के रसों का आस्वादन कर चुकी है। आज मैं इसे कालिदास द्वारा विरचित 'विक्रमोर्वशीय' नामक नये त्रोटक का अभिनय दिखलाना चाहता हूँ, अतः सभी पात्रों को सावधान कर दो कि वे अपनी-अपनी भूमिका का समुचित अभिनय करें ।

पारिपार्श्विक : - यथाज्ञापयति भावः ।

पारिपार्श्विक जैसी आपकी आज्ञा कहकर चला जाता है |

सूत्रधार : - यावदिदानीमार्यविदग्धमिश्रान् विज्ञापयामि ।

प्रणयिषु वा दक्षिण्यादथवा। सद्स्तुपुरुषबहुमानात् |

श्रृणुत जना अवधानात् क्रियामिमां कालिदासस्य ।।

(नेपथ्ये)

आर्या: । परित्रायध्वम् परित्रायध्वम् | यः सुरपक्षपाती यस्य

वाडम्बरतले गतिरस्ति ।

सूत्रधार कहता है - इस समय तब तक मैं रसास्वादन में चतुर विद्वान दर्शकों से कुछ निवेदन करना चाहता हूँ | सिर झुकाकर कहता है -

सज्जनों | आप सबसे प्रार्थना है कि हम विनम्र सेवकों पर अपनी चतुरता से अथवा इस नाटक के नायक के प्रति विशेष आदर से आप सब कालिदास की इस कृति को सावधान होकर देखें तथा सुनें ।

सूत्रधार : -(कर्णं दत्वा) अये, किं नु खलु मद्विज्ञापनानन्तरमार्तानां

कुररीणामिवाकाशे शब्द: श्रूयते १

मत्तानां कुसुमरसेन षट्पदानां शब्दोऽयम् परभृतनाद एष धीर: ।

आकाशे सुरगणसेविते समन्तात् किं नार्यः कलमधुराक्षरं प्रगीताः ॥

सूत्रधार कान लगाकर बात सुनने का अभिनय करता है और कहता है अरे ! यह क्या हुआ, मेरी प्रार्थना के समाप्त होते ही यह आकाश में कुररियों के रोने जैसा शब्द सुनाई दे रहा है ? क्या यह फूलों के रसपान से मदमत्त भौरों की गुञ्जार है अथवा कहीं यह कोयल की नशीली कूक तो नहीं है ? अथवा देवताओं, द्वारा सेवित आकाश में चारों और आई हुई सुर सुन्दरियाँ मीठी तान तो नहीं छेड़ी हुई है ?

(सोचकर) अच्छा मैंने जान लिया |

नर के मित्र (नारायण) की जाँघ से जो उर्वशी नामक अप्सरा उत्पन्न हुई थी, वह कुबेर की सेवा करके लौट रही थी, उसे आधे मार्ग में ही राक्षस बन्दी बनाकर ले गए, अतएव यह अप्सराओं का समूह रो रहा है और चिल्ला रहा है ।

(विचिन्त्य) भवतु, ज्ञातम् |

ऊरुद्भवा नटराखस्य मुनेः सुरस्त्री कैलासनाथमनुसृत्य निवर्तमाना

बन्दीकृता विबुधशत्रुभिरर्धमार्गे क्रन्दत्यतः करुणमप्सरसां गणोऽयम् ॥4

इतना कहकर सूत्रधार व पारिपार्श्विक मञ्च से चले जाते हैं और प्रस्तावना समाप्त होती है। सूत्रधार द्वारा पठित नान्दी में सामाजिकों के लिए आशीर्वाद के साथ ही कवि परिचय है ।

विक्रमोर्वशीयम् नाटक की प्रस्तावना में प्रयोगातिशय नामक भेद है |

नाटक में सूत्रधार उर्वशी नामक अप्सरा को कुबेर की सेवा करके लौटते समय आधे मार्ग में ही राक्षस द्वारा बन्दी बनाकर ले जाने की सूचना देता है। इसी योजना के अनुसार मञ्च पर अप्सराओं का प्रवेश होता है अतः प्रयोगातिशय नामक प्रस्तावना - भेद है ।

अभिज्ञानशाकुन्तल –

महाकवि कालिदास प्रणीत अभिज्ञानशाकुन्तम् नाटक में सूत्रधार रङ्गमञ्च पर मङ्गलाचरण प्रस्तुत करता है-

या सृष्टिः सृष्टुराद्या, वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री,

ये द्वे कालं विधत्तः, श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम् ।

यामाहुः सर्वबीजप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः

प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः ॥

इस पद्य में कामना की गई है कि जो विधाता की सर्वप्रथम सृष्टि है (अर्थात् जलरूप मूर्ति), जो विधिपूर्वक हवन की गई हवि को (देवताओं के पास) ले जाती है (अर्थात्अग्निरूप मूर्ति), जो होता है (अर्थात् यजमान रूप मूर्ति), जो दो समय का निर्माण करती है (अर्थात् सूर्य और चन्द्र रूपी मूर्तियाँ जो दिन और रात्रि को बनाती है), शब्द जिसका गुण है और जो विश्व में व्याप्त होकर विद्यमान है (अर्थात् आकाश रूप मूर्ति), जिसको (विद्वान) समस्त बीजों का कारण कहते हैं (अर्थात् पृथ्वी रूप मूर्ति) और जिससे सभी प्राणी जीवित रहते हैं (अर्थात् वायु रूप मूर्ति), उन प्रत्यक्ष आठ मूर्तियों से युक्त ईश्वर (शिव) आप लोगों की रक्षा करें |

यहाँ मङ्गलाचरण में सामाजिकों की रक्षा का आशीर्वादात्मक कथन है । इसके अनन्तर सूत्रधार रङ्गमञ्च पर नटी को आने की आज्ञा देता है व नेपथ्य की ओर देखकर कहता है-

आर्ये, यदि नेपथ्य कार्य (अभिनेताओं द्वारा वस्त्रादि- धारण का कार्य) समाप्त हो गया हो तो इधर आओ ।

नटी मञ्च पर उपस्थित होकर कहती है- आर्यपुत्र इयमस्मि ।

सूत्रधार :- आर्ये, अभिरूपभूयिष्ठा परिषदियम् | अद्य खलु कालिदास ग्रथितवस्तुनाऽभिज्ञानशाकुन्तल नाम घेयेन नवेन नाटकेनोपस्थातव्यमस्माभिः । तत् प्रतिपात्रमाधीयतां यत्नः ।

सूत्रधार कहता है- आर्ये, इस सभा में विद्वान अधिक संख्या में हैं। आज हमें कालिदास विरचित अभिज्ञान शाकुन्तल नामक नवीन नाटक का अभिनय करना है । अतः प्रत्येक पात्र पर विशेष ध्यान देना ।

नटी कहती है-**सुविहितप्रयोगतयार्यस्य न किमपि परिहास्यते ।**

आपके सुव्यवस्थित अभिनय के कारण कोई न्यूनता नहीं रहेगी ।

सूत्रधार : आर्ये, कथयामि ते भूतार्थम् |

आ परितोषाद विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम् |

बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः ।।

सूत्रधार कहता है- आर्ये, मैं तुमसे सच कहता हूँ ! जब तक विद्वान् सन्तुष्ट न हो जाएँ, तब तक मैं अपने अभिनय - कौशल को सफल नहीं समझता । विशेष रूप से शिक्षितों का भी चित्त अपने विषय में अविश्वासयुक्त ही होता है।

नटी - आर्य, एवमेतत् | अनन्तरकरणीयमार्य आज्ञापयतु ।

नटी कहती है - आर्य, ऐसा ही है। अब जो करना है उसका आप आदेश दें ।

सूत्रधार : -

किमन्यदस्या: परिषद: श्रुतिप्रसादनतः | तदिदमेव

तावदचिरप्रवृत्तमुपभोगक्षमं ग्रीष्मसमयमधिकृत्य गीयताम् |

सम्प्रति हि -

सुभगसलिलावगाहा: पाटलसंसर्गसुरभिवनवाता : ।

प्रच्छायसुलभनिद्रा दिवसा: परिणामरमणीयाः ।।

सूत्रधार कहता है - इस सभा के कानों को प्रसन्न करने के अतिरिक्त और क्या ? अतः शीघ्र ही प्रारम्भ हुए, (जलस्नानादि) सुखों के योग्य इस ग्रीष्म ऋतु के विषय में ही गाओ । इस समय (दिन में) जल में स्नान सुखकर ज्ञात हो होता है, गुलाबों के सम्पर्क से वन की वायुएँ सुगन्ध - युक्त होती हैं, घनी छाया में नींद सरलता से आती है और दिन सायंकाल के समय मनोहर होते हैं ।

नटी - तथा (इति गायति)

-ईसीसिचुंबिआई भमरेहिं सुउमारकेसरसिहाई ।

आदंसयंति दअमाणा पमदाओ सिरीसकुसुमाई ||

नटी कहती है - वैसा ही होगा। और गाती है - युवतियाँ दया भाव से भौरों के द्वारा कुछ- कुछ आस्वादित कोमल केसर - शिखा- युक्त शिरीष के फूलों को कान का आभूषण बना रही हैं ।

सूत्रधार : - आर्ये, साधु गीतम् | अहो, रागबदचित्तवृत्तिरालिखित इव सर्वतो रङ्गः । तदिदानीं कतमत् प्रकरणमाश्रित्यैनमाराधयामः।

सूत्रधार कहता है - आर्ये, तुमने बहुत अच्छा गाया | ओह तुम्हारे राग ने सबके मन को आकृष्ट कर लिया है और सभी ओर दर्शक चित्रित से प्रतीत होते हैं । अतः इस समय किस नाटक का प्रदर्शन कर के इनको प्रसन्न करें |

नटी – नन्वार्थमिश्रै: प्रथममेवाज्ञप्तमभिज्ञानशाकुन्तलं नामापूर्वं नाटकं

प्रयोगेऽधिक्रियतामिति ।

नटी कहती है - आपने पहले ही आदेश दिया था कि शाकुन्तल नामक नाटक का अभिनय किया जाय ।

सूत्रधार कहता है - आर्ये, तुमने ठीक स्मरण दिलाया इस समय मैं यह भूल गया था। क्योंकि- तुम्हारे मनोहर सङ्गीत के राग से मैं उसी प्रकार बलात् हर लिया गया हूँ जिस प्रकार अतिवेग वाले मृग के द्वारा यह राजा दुष्यन्त हर लिये गये हैं । -

आर्ये, सम्यगनुबोधितोऽस्मि । अस्मिन् क्षणे विस्मृतं खलु मया । कुतः ।

तवास्मि गीतरागेण हारिणा प्रसभं हृतः ।

एष राजेव दुष्यन्तः सारङ्गेणातिरहंसा 11

.इतना कहकर सूत्रधार व नटी मञ्च से चले जाते हैं और प्रस्तावना समाप्त होती है।

आचार्य भरत द्वारा निर्दिष्ट भेदों में से अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक की प्रस्तावना में 'अवलगित' नामक भेद है। अवलगित को स्पष्ट करते हुए भरत ने कहा है-

यत्रान्यस्मिन् समावेश्य कार्यमन्यत्प्रसाधयते ।

तच्चावलगितं नाम विज्ञेयं नाट्ययोक्तृभिः || (6)

जब किसी अन्य बात या कार्य का समावेश कर उससे किसी दूसरे कार्य की सिद्धि की जाए तो उसे 'अवलगित 'समझना चाहिये

'अभिज्ञानशाकुन्तल' नाटक में सूत्रधार नटी के सङ्गीत से अति प्रसन्न होकर कहता है - मैं तुम्हारे सुन्दर और मनोहारी गीत के राग से उसी प्रकार खिंचा आया जैसे वेग से दौड़ने वाले हिरण से बलात् खींच जाने वाला यह राजा दुष्यन्त हो ।

इसी योजना के अनुसार मञ्च पर रथ पर बैठे हुए, मृग का पीछा करते हुए, राजा का सारथि के साथ प्रवेश होता है। अतः यहां अवलगित नामक प्रस्तावना भेद है ।

सागरनन्दी ने अपने ग्रन्थ नाटकलक्षणरत्नकोश में अवलगित को स्पष्ट अभिज्ञानशाकुन्तलम् का ही उदाहरण दिया है -

अवलगितं पात्रसंसूचनार्थं यदालपनं तद् दृष्टव्यम् ।

यथा**- तवास्मि गीतरागेण हारिणा प्रसभं हृतः ।**

एष राजेव दुष्यन्तः सारङ्गेणातिरहंसा ॥7

उपसंहार-

कालिदास के तीनों रूपकों की प्रस्तावना, के विश्लेषण से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि इसमें उन्होंने कवि-परिचय, नाटक की कथावस्तु का तथा नाटक खेलने के अवसर का परिचय दिया है। मालविकाग्निमित्रम नाटक व विक्रमोर्वशीयम् नाटक में प्रयोगातिशय तथा अभिज्ञानशाकुन्तल नाटक की प्रस्तावना में अवगलित नामक प्रस्तावना भेद है | इसके अनन्तर तीनों नाटकों की प्रस्तावना मे आर्शीवादात्मक नान्दी अवलोकित होती है। नाट्याभिनय के अवसर की चर्चा करते हुए उन्होने यह भी निर्देश किया है कि किस समाज की आज्ञा से नाटक खेला जा रहा है। उनकी प्रस्तावना मे मनोवैज्ञानिक तथ्य भी मिलता है।

.

संदर्भ:

1. मालविकाग्निमित्रम्,1 / 1-3
2. नाट्यशास्त्र, 5/172

3. नाट्यशास्त्र 22/34.
4. विक्रमोर्वशीयम्, 1/1-3.
5. अभिज्ञानशाकुन्तलम्, 1/4-5
6. नाटशास्त्र, २०/119
7. नाटकलक्षणरत्नकोश 121